Bhagirathi bal shiksha sadan

Class_ 6

Hindi

(भजन, पूजन, साधन, आराधना)

पुजारी! भजन, पूजन, साधन, आराधना, इन सबको किनारे रख दे।
द्वार बन्द करके देवालय के कोने में बैठा है?
अपने मन के अन्धकार में छिपा बैठा, तू कौन-सी पूजा में मग्न है?
आँखें खोलकर जरा देख तो सही, तेरा देवता तेरे देवालय में नहीं है!
जहाँ कठोर जमीन को नरम करके किसान खेती कर रहे हैं,
जहाँ मजदूर पत्थर तोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं,
तेरा देवता वहीं चला गया है!

वे धूप-बरसात में सदा एक-समान तपते-झुलसते हैं,
उनके दोनों हाथ मिट्टी में सने हैं,
उनके पास जाना है तो सुन्दर परिधान त्याग कर मिट्टी-भरे रास्ते से जा!
तेरा देवता देवालय में नहीं है,
भजन, पूजन, साधन को किनारे रख दे!

Scanned with CamScanner

पुजारी, भजन, पूजन, साधन, आराधना
इस सबको किनारे रख दे
द्वार बंद करके देवालय के कोने में क्यों बैठा है?
अपने मन के अंधकार में छिपा बैठा, तू कौन सी पूजा में मग्न है?
आँखें खोलकर जरा देख तो सही, तेरा देवता देवालय में नहीं है
जहाँ कठोर जमीन को नरम करके किसान खेती कर रहे हैं
जहाँ मजदूर पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं।
तेरा देवता वहीं चला गया है
वे धूप-बरसात में सदा एक समान झुलसते हैं,
उनके दोनों हाथ मिट्टी में सने हैं
अपने सुंदर परिधान त्यागकर उनकी तरह मिट्टी भरे रास्तों से जा
तेरा देवता देवालय में नहीं है
भजन, पूजन, साधन को किनारे रख दे
मुक्ति? अरे मुक्ति कहां है
कहां मिलेगी मुक्ति
अपने सृष्टि बंध से प्रभु स्वयं बधे हैं
ध्यान पूजा को किनारे रख दे
फूल की डाली को छोड़ दे। वस्त्रों को फटने दे, धूल धुसरित होने दे
उनके साथ काम करते हुए पसीना बहने दे

Scanned with CamScanner

Bhagirathi bal shiksha sadan

Class 6

Subject hindi

पूरी गीतांजलि का सार यही है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ पूरी गीतांजलि में अहंकार से मुक्ति की कामना करते हैं और फिर यह जान लेते हैं कि असल मुक्ति श्रम में है, लेकिन श्रम, बिना प्रेम के अधूरा है। इसीलिए वे इंसान को पहले अहंकार से मुक्त होने, प्रेममय होने और फिर श्रम के लिए प्रेरित करते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस पूरी प्रक्रिया के लिए वे ईश्वर को साधन बनाते हैं, साध्य नहीं। प्रेमिल हृदय के श्रम से ही मनुष्य असल में समाज में अपनी उपयोगिता और कर्मठता सिद्ध करता है। यही श्रम की महत्ता है और यही प्रेम की भी महत्ता है। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ गीतांजलि में इस महत्व को पूरी सफलता से सर्जित कर जाते हैं।

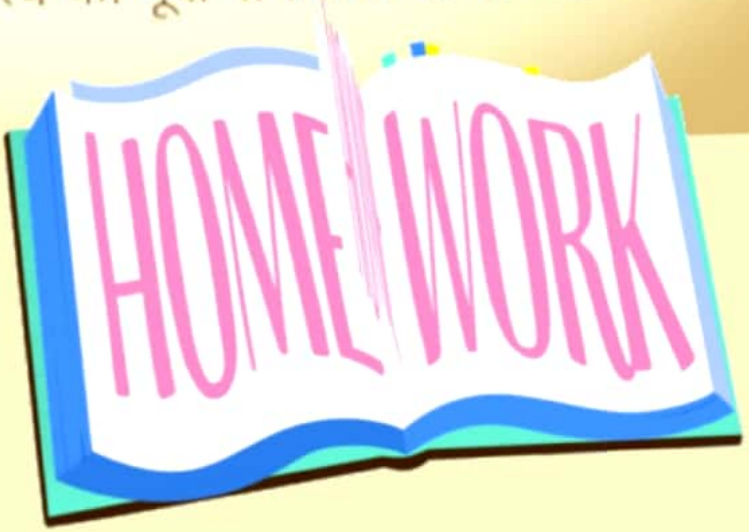

Scanned with CamScanner

शब्द-ज्ञान

साधन – पूजा की सामग्री (इस कविता में)
आराधना – उपासना
मग्न – डूबा हुआ
परिधान – वस्त्र
सृष्टि बंध – संसार के रचना-कार्य में लगे हुए
मन का अंधकार – अज्ञानता
पसीना बहाना – कड़ी मेहनत करना
देवालय – मंदिर
त्यागना – छोड़ना
मुक्ति – छुटकारा
वस्त्र – कपड़े
किनारे रख दे – छोड़ दे

धूप-बरसात में एक समान होना – सुख-दुख में समान रहना
धूल-धूसरित होना – धूल मिट्टी की परवाह न करना, मिट्टी में सनना

कविता से

बोध और सराहना

उत्तर लिखिए–

1. कवि ने पुजारी से भजन-पूजन छोड़ने की बात क्यों कही है?
2. कवि पुजारी से क्या प्रश्न करता है और क्यों?
3. कवि पुजारी को उसके देवता के बारे में क्या बताता है?
4. देवता कहाँ चला गया है?
5. कवि के अनुसार देवता का वास कहाँ होता है?
6. कवि अंत में पुजारी को क्या सलाह देता है?

Scanned with CamScanner